18-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम्हें मन्सा-वाचा-कर्मणा एक्यूरेट बनना है, क्योंकि तुम देवताओं से भी ऊंच ब्राह्मण चोटी हो"

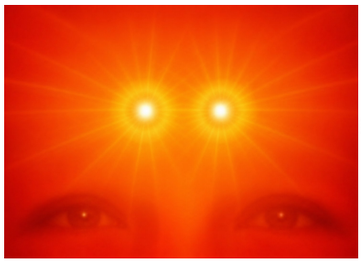


प्रश्नः- सबसे गुप्त और महीन बात कौन सी है जो बच्चे भी मुश्किल ही समझ सकते हैं?

उत्तरः- शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा का भेद समझना यह सबसे गुप्त और महीन बात है। इसमें कई बच्चे मूँझ जाते हैं। यह राज़ स्वयं बाप बतलाते हैं कि मैं सवेरे सवेरे इस तन द्वारा तुम बच्चों को पढ़ाता हूँ, बाकी ऐसे नहीं कि मैं कोई सारा दिन इन पर सवारी करता हूँ।







= ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा



ओम् शान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझाते हैं। बच्चे कौन हैं? ब्राह्मण। **यह कभी भूलो मत कि** हम ब्राह्मण हैं, देवता बनने वाले हैं। वर्णों को भी याद करना होता है। यहाँ तुम आपस में ब्राह्मण ही ब्राह्मण हो। ब्राह्मणों को बेहद का बाप पढ़ाते हैं। यह ब्रह्मा नहीं पढ़ाते हैं। शिवबाबा पढ़ाते हैं। ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों को ही पढ़ाते हैं। शूद्र से ब्राह्मण बनने बिना देवता बन नहीं सकते। वर्सा तो शिवबाबा से मिलता है। शिवबाबा तो सभी का बाप है। इस ब्रह्मा को ग्रैन्ड फादर कहा जाता है। लौकिक बाप तो सबको होते ही हैं। पारलौकिक बाप को भक्ति मार्ग में याद करते हैं। अब तुम बच्चे समझते हो - यह अलौकिक बाप है, जिसको कोई नहीं जानते हैं। भल ब्रह्मा का मन्दिर है। यहाँ भी प्रजापिता आदि देव का मन्दिर है। उनको महावीर भी कहते हैं, कोई दिलवाला भी कहते हैं। परन्तु वास्तव में दिल लेने वाला है शिवबाबा, न कि ब्रह्मा। सभी आत्माओं को सदा सुखी करने वाला, खुशी देने वाला एक ही बाप है। यह भी सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। दुनिया में तो मनुष्य कुछ भी नहीं जानते। हम ब्राह्मण ही शिवबाबा से वर्सा ले रहे हैं। तुम भी घड़ी घड़ी भूल

Mind very well...
For New commers





How lucky and Great we are...!

जाते हो। याद है बड़ी सहज। योग अक्षर संन्यासियों ने रखा है। तुम तो बाप को याद करते हो। योग तो कॉमन अक्षर है, इनको योग आश्रम भी नहीं कहेंगे। बच्चे और बाप बैठे हैं। बच्चों का फ़र्ज है बेहद के बाप को याद करना। हम ब्राह्मण हैं, दादे से वर्सा लेते हैं ब्रह्मा द्वारा इसलिए शिवबाबा कहते हैं जितना हो सके याद करते रहो। चित्र भी भल याद रखो। याद तो रहेगी, हम ब्राह्मण हैं, बाप से वर्सा लेते हैं। ब्राह्मण कब अपनी जाति को भूलते हैं क्या? **तुम शूद्रों के संग में आने से ब्राह्मणपना भूल जाते हो**। ब्राह्मण तो देवताओं से भी ऊंच हैं क्योंकि तुम ब्राह्मण नॉलेजफुल हो। भगवान को जानी-जाननहार कहते हैं ना। इसका अर्थ यह नहीं कि सबके दिल में क्या है वह बैठ देखता है। नहीं, उनको सृष्टि के आदि मध्य अन्त की नॉलेज है। वह बीजरूप है। बीज झाड़ के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। तो ऐसे बाप को बहुत-बहुत याद करना है। इनकी आत्मा भी उस बाप को याद करती है। वह बाप कहते हैं यह (ब्रह्मा) भी मुझे याद करेंगे तब यह पद पायेंगे। तुम भी याद करेंगे तो पद पायेंगे। पहले-पहले तुम बिना शरीर (अशरीरी) आये थे। फिर अशरीरी बनकर वापिस



Attention..!







जाना है। और सब देह के सम्बन्धी तुमको दु:ख देने वाले हैं, उनको क्यों याद करते हो! जबकि मैं तुमको मिला हूँ। मैं तुमको नई दुनिया में ले जाने आया हूँ। वहाँ कोई दु:ख नहीं। वह है दैवी सम्बन्ध। यहाँ पहले दु:ख होता है- स्त्री और पुरुष के सम्बन्ध में, क्योंकि विकारी बनते हैं। तुमको मैं अब उस दुनिया के लायक बनाता हूँ, जहाँ विकार की बात ही नहीं रहती। यह काम महाशत्रु गाया हुआ है, जो आदि मध्य अन्त दु:ख देते हैं। क्रोध के लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि यह आदि मध्य अन्त दु:ख देते हैं। नहीं, काम को जीतना है, वही आदि मध्य अन्त दु:ख देते हैं। पतित बनाते हैं। पतित अक्षर विकार पर पड़ता है। इस दुश्मन पर जीत पानी है। तुम जानते हो हम सतयुग के देवी-देवता बन रहे हैं। जब तक यह निश्चय नहीं तब तक कुछ पा नहीं सकेंगे। समझा?

Point to be Noted

Point to ponder deeply...





Refer last page for भगवद् गीता on काम विकार

Mind It...

बाप समझाते हैं - बच्चों को मन्सा-वाचा-कर्मणा एक्यूरेट बनना है। मेहनत है। दुनिया में यह किसको भी पता नहीं कि तुम भारत को स्वर्ग बनाते हो। आगे



चलकर समझेंगे, चाहते भी हैं कि वन वर्ल्ड, वन राज्य, वन रिलीजन, वन भाषा हो। तुम समझा सकते हो - आज से 5 हजार वर्ष पहले एक राज्य, एक धर्म था, जिसको स्वर्ग कहा जाता है। रामराज्य, रावणराज्य को भी कोई नहीं जानते। तुम भी नहीं जानते थे। अब तुम स्वच्छ बुद्धि बने हो, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप बैठ तुमको समझाते हैं तो जरूर बाप की मत पर चलो। बाप कहते हैं पुरानी दुनिया में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो। मुझे याद भी करते रहो। बाप आत्माओं को समझाते हैं। आत्माओं को ही पढ़ाने आया हूँ, इन आरगन्स द्वारा। यह तो पुरानी छी-छी दुनिया, छी-छी शरीर है। तुम ब्राह्मण पूजा के लायक नहीं हो, गायन लायक हो। पूजन लायक देवतायें हैं। तुम श्रीमत पर विश्व को स्वर्ग बनाते हो इसलिए तुम्हारा गायन है, पूजा नहीं हो सकती। गायन जरूर तुम ब्राह्मणों का है, न कि देवताओं का। बाप तुमको ही शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं। देवताओं की आत्मा और शरीर दोनों पवित्र हैं। अब तुम्हारी आत्मा पवित्र होती जाती है। शरीर पवित्र नहीं है। अब तुम ईश्वर की मत पर भारत को स्वर्ग बना रहे हो। तुम भी स्वर्ग के लायक बन रहे





पावन तो बनना ही पड़ेगा
चाहे प्यार से (मीठे बाबा की श्रीमत पर चलके)..
चाहे मार से..

Choice is All yours

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!









हो। सतोप्रधान जरूर बनना है। सिर्फ तुम ब्राह्मण ही हो जिसको बाप बैठ पढ़ाते हैं। ब्राह्मणों का झाड़ वृद्धि को पाता रहेगा। ब्राह्मण जो पक्के बन जायेंगे वही जाकर देवता बनेंगे। यह नया झाड़ है, माया के तूफान भी लगते हैं। सतयुग में कोई तूफान नहीं लगेगा। **यहाँ माया बाबा की याद में रहने नहीं देती** है। हम जानते हैं बाबा की याद से ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बने हैं। **सारा मदार है याद पर**। भारत का प्राचीन योग भी मशहूर है ना। विलायत वाले चाहते हैं, प्राचीन योग आकर कोई सिखाये।



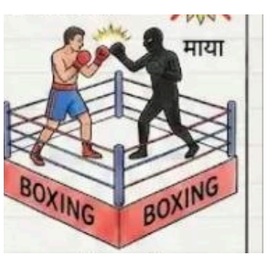
अब **योग दो प्रकार का** है एक हैं हठयोगी, दूसरे हैं राजयोगी। तुम हो राजयोगी। वह तो बहुत दिन से चले आते हैं। राजयोग का अब तुमको पता पड़ा है। संन्यासी क्या जानें राजयोग से। बाप ने आकर बताया है राजयोग मैं ही आकर सिखाता हूँ, श्रीकृष्ण तो सिखला न सके। यह भारत का ही प्राचीन योग है, सिर्फ गीता में मेरे बदले श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है। कितना फ़र्क हो गया है। शिव जयन्ती होती है तो

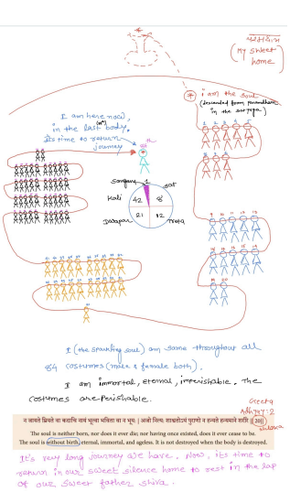


तुम्हारे वैकुण्ठ की भी जयन्ती होती है, जिसमें श्रीकृष्ण का राज्य है। तुम जानते हो शिवबाबा की जयन्ती है तो गीता की भी जयन्ती है, वैकुण्ठ की भी जयन्ती हो रही है। तुम पवित्र बन जायेंगे, कल्प पहले मुआफ़िक स्थापना हो रही है तो शिवबाबा की जयन्ती सो स्वर्ग की जयन्ती, बाबा ही आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो। **याद न करने से माया कुछ न कुछ विकर्म करा देती है। याद नहीं किया और लगी चमाट।** याद में रहने से चमाट नहीं खायेंगे। यह बॉक्सिग होती है। तुम जानते हो हमारा दुश्मन कोई मनुष्य नहीं है, रावण दुश्मन है। शादी करने के बाद कुमार-कुमारी भी पतित बनने से एक दो के दुश्मन बन जाते हैं। शादी में लाखों रूपये खर्च करते हैं। बाप कहते हैं शादी है बरबादी। अब **पारलौकिक बाप ने आर्डीनेन्स निकाला है** कि बच्चे यह काम महाशत्रु है, इन पर जीत पहनो और पवित्रता की प्रतिज्ञा करो। कोई भी पतित न बने। **जन्म-जन्मान्तर तुम पतित बने हो इस विकार से,** इसलिए **काम महाशत्रु** कहा जाता है। बाप तो बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। तुमने 84 जन्म कैसे लिए हैं। अब वापिस जाना है।





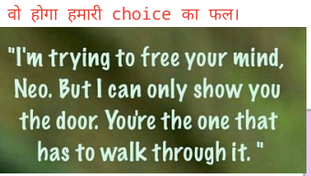




How it is so..? Subtle Point to understand

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

देखो, यह हमें बाबा रास्ता दिखा रहे हैं..
अब उसको करना या न करना, ये हमारी choice है..
और उसी के अनुरुप जो परिणाम हमे प्राप्त होगा,
वो होगा हमारी choice का फल।



Shiv baba: i can only show you the door..
मैं किसी पर भी ताज नहीं रखता।
अगर तुम मेरी श्रीमत पर चलेंगे तो राजा बनेंगे, नहीं चलेंगे तो प्रजा।
और वो भी कल्प कल्पान्तर...(forever)
अब ये तुम पर निर्भर करता है कि तुम्हें क्या बनना है...?

तुमको तो बड़ा ही शुद्ध अहंकार होना चाहिए। हम आत्मायें **बाप की मत पर चल** भारत को स्वर्ग बना रहे हैं। हम ही फिर स्वर्ग में राज्य करेंगे। **जितनी मेहनत करेंगे उतना पद पायेंगे।** चाहे राजा-रानी बनो, चाहे प्रजा बनो। राजा-रानी कैसे बनते हैं वह भी देख रहे हो। फालो फादर गाया जाता है। वह अब की बात है। लौकिक सम्बन्ध के लिए नहीं कहा जाता है। यह बाप मत देते हैं, मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। तुम समझते हो हम अच्छी मत पर चलते हैं, बहुतों की सेवा करते हैं। बच्चे बाप के पास आते हैं तो शिवबाबा भी रिफ्रेश करते हैं तो यह भी रिफ्रेश करते हैं। यह भी तो सीखते हैं ना। शिवबाबा कहते हैं मैं आता हूँ सवेरे को। अच्छा फिर कोई मिलने आते हैं तो क्या यह ब्रह्मा नहीं समझायेंगे। ऐसे कहेंगे क्या कि बाबा आप आकर समझाओ मैं नहीं समझाऊंगा। यह **बड़ी गुप्त गुह्य बातें** हैं ना। मैं तो सबसे अच्छा समझा सकता हूँ। तुम ऐसे क्यों समझते हो कि शिवबाबा ही समझाते हैं। यह नहीं समझाते होंगे। यह भी जानते हो **कल्प पहले इसने समझाया है तब तो यह पद पाया है।** मम्मा भी समझाती थी ना। वह भी ऊंच पद पाती है। वहाँ

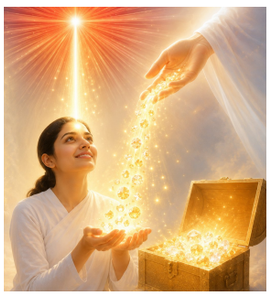


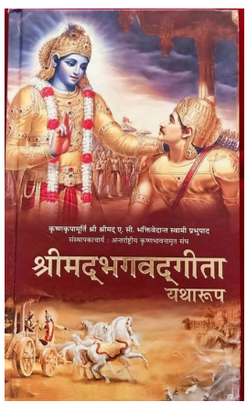


बाबा को सूक्ष्म वतन में देखते हैं तो बच्चों को फॉलो करना है। सरेन्डर होते भी गरीब हैं। साहूकार तो सरेन्डर हो न सकें। गरीब ही कहते हैं - बाबा यह सब कुछ आपका है। शिवबाबा तो दाता है, वह कभी लेता नहीं। बच्चों को कहते हैं यह सब कुछ तुम्हारा है। अपने लिए महल यहाँ या वहाँ नहीं बनाता हूँ। तुमको ही स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। अब इन ज्ञान रत्नों से झोली भरनी है। मन्दिर में जाकर कहते हैं झोली भर दो। परन्तु किस प्रकार की, किस चीज़ की झोली भर दो? अब झोली भरने वाली तो लक्ष्मी है जो पैसा देती है। शिव के पास तो जाते नहीं। श्रीकृष्ण के लिए कहते हैं कि गीता सुनाई। परन्तु श्रीकृष्ण के लिए नहीं कहते झोली भर दो। शंकर के पास जाकर कहते हैं। समझते हैं शिव और शंकर एक हैं। शंकर तो झोली खाली करने वाला है, हमारी झोली तो कोई खाली नहीं कर सकता। **विनाश तो होना ही है।** गाया हुआ भी है रूद्र ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला निकली। परन्तु ऐसे कोई समझते थोड़ेही हैं।

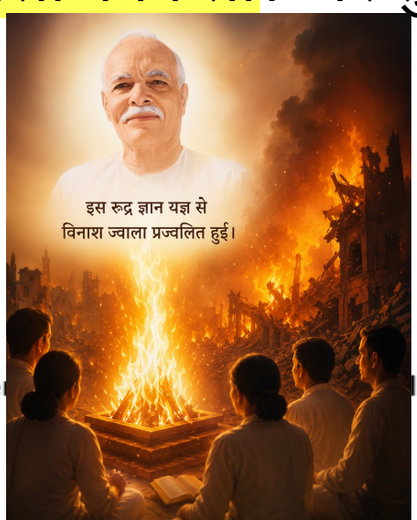
ये तो पक्का कर लो..

Niskam Sevadhari मेरा बाबा





As Certain as Death





तुम बच्चों को गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। धन्धा भी करना है। बाप हर एक की नब्ज देख राय देते हैं क्योंकि बाप समझते हैं **मैं कहूँ और कर न सकें, ऐसी राय ही क्यों दूँ।** नब्ज देखकर ही राय देते हैं। इनके पास तो आना पड़े। वह पूरी राय देंगे। सबको पूछना चाहिए- बाबा इस हालत में हमको क्या करना चाहिए! अब क्या करें? बाप स्वर्ग में तो ले जाते हैं। तुम जानते हो हम स्वर्गवासी तो बनने वाले हैं, अब हम नर्कवासी हैं। **अब तुम न नर्क में हो, न स्वर्ग में हो।** जो-जो ब्राह्मण बनते हैं उनका लंगर इस छी-छी दुनिया से उठ चुका। तुम कलियुगी दुनिया से किनारा अब छोड़ चुके हो। कोई ब्राह्मण तीखा जा रहा है, कोई याद की यात्रा में कम। कोई हाथ छोड़ देते हैं तो घुटका खाकर डूब मरते हैं अर्थात् फिर कलियुग में चले जाते हैं। तुम जानते हो खिवैया अब हमको ले जा रहे हैं। वह यात्रा तो अनेक प्रकार की है। तुम्हारी यात्रा एक ही है, यह बिल्कुल ही न्यारी यात्रा है। हाँ, तूफान आते हैं जो याद को तोड़ देते हैं। इस याद की यात्रा को अच्छी रीति पक्का करो,







As much As Possible



याद करो...

मेहनत करो। तुम कर्मयोगी हो। जितना हो सके **हथ कार डे, दिल यार डे**। आधाकल्प से तुम आशिक बन माशूक को याद करते आये हो। बाबा हमको यहाँ बहुत दु:ख है, अब हमको सुखधाम का मालिक बनाओ। **याद की यात्रा में रहेंगे तो तुम्हारे पाप खलास हो जायेंगे।** तुमने ही स्वर्ग का वर्सा पाया था, अब गँवाया है। भारत स्वर्ग था तब कहते हैं प्राचीन भारत। भारत को बहुत मान देते हैं, सबसे बड़ा भी है, सबसे पुराना भी है। यह तो तुम जानते हो विनाश





सामने खड़ा है। जो अच्छी रीति समझते हैं उन्हों के अन्दर में बहुत खुशी रहती है। प्रदर्शनी में कितने आते हैं। अहमदाबाद में देखो कितने साधू-सन्त आदि हर प्रकार के आये। कहते हैं तुम तो सत्य कहती हो। परन्तु हमको बाप से वर्सा लेना है, यह थोड़ेही बुद्धि में बैठता है। यहाँ से बाहर निकले खलास। अभी तुम जानते हो कि बाप हमको स्वर्ग में ले जाते हैं। **वहाँ न गर्भ जेल, न वह जेल होगी। फिर कभी जेल का मुँह देखने को नहीं मिलेगा। दोनों जेल नहीं रहेंगी।** यहाँ यह सब है माया का पॉम्प। आजकल **हर एक बात क्वीक** होती है। मौत भी क्वीक होती रहती है। सतयुग में ऐसे कोई उपद्रव



होते ही नहीं हैं। यहाँ मौत भी जल्दी, तो दु:ख भी बहुत होंगे। सब खलास हो जायेंगे। सारी धरती नई हो जायेगी। सतयुग में देवी-देवताओं की राजधानी थी, सो जरूर फिर होगी। आगे चल देखना क्या होता है! बहुत भयंकर सीन है। तुम बच्चों ने साक्षात्कार किया है। बच्चों के लिए मुख्य है याद की यात्रा। यह है चढ़ती कला की यात्रा। अच्छा!

Take it Seriously..
NOW . . .

'भयंकर' का सही संधि विच्छेद भयम् + कर होता है।
अर्थात् भयभीत करने वाला । दूसरे शब्दों में कहें तो ' डरावना ' ।



मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों का नमस्ते।



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा



18-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

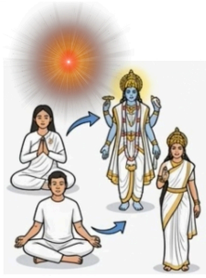
धारणा के लिए मुख्य सारः-

यह परम ज्ञान अब तक
ना पढ़ा ना लिखा गया है किताबों में
भगवान पढ़ायेंगे सम्मुख
सोचा ना देखा ख्वाबों में
प्रभु मिलन का यह प्यारा अनुभव
शब्दों में कहा नहीं जाता है
भगवान तुम्हारा ज्ञान सिमर कर

Point for Intoxication

1) सदा इसी स्मृति में रहना है कि हम ब्राह्मण हैं। हम ब्राह्मणों को ही भगवान पढ़ाते हैं। हम अभी ब्राह्मण सो देवता बन रहे हैं।







2) ज्ञान रत्नों से अपनी झोली भरकर दान करना है। इस कलियुगी पतित दुनिया का किनारा छोड़ देना है। माया के तूफानों से डरना नहीं है।





Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result



वरदानः- बर्थ राईट के नशे द्वारा लक्ष्य और लक्षण को समान बनाने वाले श्रेष्ठ तकदीरवान भव

Finale Achievement





जैसे लौकिक जन्म में स्थूल सम्पत्ति बर्थ राईट होती है, वैसे ब्राह्मण जन्म में दिव्यगुण रूपी सम्पत्ति, ईश्वरीय सुख और शक्ति बर्थ राईट है।



बर्थ राईट का नशा नेचुरल रूप में रहे तो मेहनत करने की आवश्यकता नहीं। इस नशे में रहने से लक्ष्य और लक्षण समान हो जायेंगे।

स्वयं को जो हूँ, जैसा हूँ, जिस श्रेष्ठ बाप और परिवार का हूँ वैसा जानते और मानते हुए श्रेष्ठ तकदीरवान बनो।



स्लोगनः हर कर्म स्व स्थिति में स्थित होकर करो तो सहज ही सफलता के सितारे बन जायेंगे।

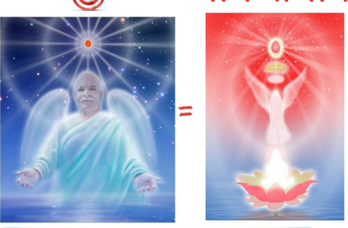


सफलता के सितारे

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

ये अव्यक्त इशारे -

बाप समान



ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो





एक सेकेण्ड में आवाज में आओ और एक सेकेण्ड में आवाज से परे हो जाओ, अभी-अभी आवाज में, अभी-अभी आवाज़ से परे.. जब यह अभ्यास सरल और सहज हो जायेगा तब समझो सम्पूर्णता समीप है।

Call of time/समय की पुकार



अभी आपकी हर कर्मेन्द्रिय "जी हजूर" "जी हाज़िर" करती हुई चले।

Litmus Test

ऐसे जब आप राज्य अधिकारियों का यह कर्मेन्द्रियां स्वागत अर्थात् सलाम करेंगी तब सम्पन्न व सम्पूर्ण कर्मातीत बन सकेंगे।

अभी -अभी



अभी -अभी



धारणा, Green = सेवा

If you wish to stay connected, Here is the link







BKdrluhar

Mind Mapping is Available Here

All वरदान slogans Oct 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Oct 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अगर आप को Mind Maps के रिलेटेड कोई Feedback या Suggestion भेजना है तो Click

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः॥

अर्जुन बोले—हे कृष्ण! तो फिर यह मनुष्य स्वयं न चाहता हुआ भी बलात् लगाये हुएकी भाँति किससे प्रेरित होकर पापका आचरण करता है?॥ ३६॥

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥

श्रीभगवान् बोले—रजोगुणसे उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है, यह बहुत खानेवाला अर्थात् भोगोंसे कभी न अघानेवाला और बड़ा पापी है, इसको ही तू इस विषयमें वैरी जान॥ ३७॥

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्॥

जिस प्रकार धूएँसे अग्नि और मैलसे दर्पण ढका जाता है तथा जिस प्रकार जेरसे गर्भ ढका रहता है, वैसे ही उस कामके द्वारा यह ज्ञान ढका रहता है॥ ३८॥

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च॥

और हे अर्जुन! इस अग्निके समान कभी न पूर्ण होनेवाले कामरूप ज्ञानियोंके नित्य वैरीके द्वारा मनुष्यका ज्ञान ढका हुआ है॥ ३९॥

Enemy Forever

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्॥

इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि—ये सब इसके वासस्थान कहे जाते हैं। यह काम इन मन, बुद्धि और इन्द्रियोंके द्वारा ही ज्ञानको आच्छादित करके जीवात्माको मोहित करता है॥ ४०॥

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्॥

इसलिये हे अर्जुन! तू पहले इन्द्रियोंको वशमें करके इस ज्ञान और विज्ञानका नाश करनेवाले महान् पापी कामको अवश्य ही बलपूर्वक मार डाल॥ ४१॥

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥

इन्द्रियोंको स्थूल शरीरसे पर यानी श्रेष्ठ, बलवान् और सूक्ष्म कहते हैं; इन इन्द्रियोंसे पर मन है, मनसे भी पर बुद्धि है और जो बुद्धिसे भी अत्यन्त पर है वह आत्मा है॥ ४२॥

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्॥

इस प्रकार बुद्धिसे पर अर्थात् सूक्ष्म, बलवान् और अत्यन्त श्रेष्ठ आत्माको जानकर और बुद्धिके द्वारा मनको वशमें करके हे महाबाहो! तू इस कामरूप दुर्जय शत्रुको मार डाल॥ ४३॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

Formidable Enemy

Biggest enemy of soul/human Being is not any person/religion, but the 'Kaam vikar' is.

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥

विषयोंका चिन्तन करनेवाले पुरुषकी उन विषयोंमें आसक्ति हो जाती है, आसक्तिसे उन विषयोंकी कामना उत्पन्न होती है और कामनामें विघ्न पड़नेसे क्रोध उत्पन्न होता है॥ ६२॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

क्रोधसे अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भावसे स्मृतिमें भ्रम हो जाता है, स्मृतिमें भ्रम हो जानेसे बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्तिका नाश हो जाता है और बुद्धिका नाश हो जानेसे यह पुरुष अपनी स्थितिसे गिर जाता है॥ ६३॥

Soul

विषयो के चिंतन से आसक्ति
आसक्ति से कामना/काम
कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध
क्रोध से *अत्यंत* मूढ़भाव
मूढ़भाव से स्मृतिमें भ्रम
स्मृति में भ्रम से बुद्धि अर्थात ज्ञानशक्ति का नाश
बुद्धि का नाश हो जाने से पुरुष(आत्मा) अपनी स्थिति से गिर जाता है।

गीता अध्याय 2 - श्लोक 62,63

So, ultimate Root cause as per revered "Geeta" is

Kaam vikar